International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(II), January - March, 2024, pp. 183-185

दूधनाथ सिंह के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक स्वरूप

आशा देवी*
डॉ. करसन रावत**

प्रस्तावना

दूधनाथ सिंह का जन्म 17 अक्टूबर 1936 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में हुआ। वे एक किसान परिवार से नाता रखते हैं। उनका बचपन कठिनाइयों में व्यतीत हुआ। उनकी आरंभिक शिक्षा गांव में हुई, उन्होंने हिंदी साहित्य में एम. ए. इलाहाबाद विश्वविद्यालय से किया। कलकत्ता में अध्यापन कार्य से आजीविका की शुरुआत हुई। बाद में वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुए और हिंदी विभाग में अपनी सेवा दी। साठोत्तरी पीढ़ी के अग्रिम कहानीकारों में शुमार दूधनाथ सिंह ने उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, आलोचना आदि विधाओं में योगदान किया। उनका रचना– संसार मानव धर्मी और यह मानव धर्मिता वास्तविक अंतर्विरोधों के बड़े क्षेत्र से उत्पन्न न होकर लेखक के अपने अनुभव क्षेत्र के समूह का प्रतिफल है। उन्होंने जनवादी लेखक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में अपूर्व योगदान दिया। दूधनाथ सिंह ऐसे साहित्यकार रहे, जिन्होंने हिंदी की तमाम विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है।

मनोविज्ञान हिंदी शब्द है जिसका अर्थ है– 'मन का विज्ञान'। भारतीय मनोविज्ञान में मानव मन को अधिक महत्व दिया गया है। मनोविज्ञान का क्षेत्र आज के समय में बड़ा होता जा रहा है। जो पहले मानव के मन तक स्थायी था वह आज प्रत्येक जीव –जंतु के मन एवं व्यवहार तक फैल चुका है। मनोविज्ञान के बढ़ते हुए क्षेत्र पर आज काफी कुछ नवीन कार्य हो रहे है। आज मनोविश्लेषणात्मक क्षेत्र एक विषय विशेष तक निश्चित नहीं है। अपितु इसका प्रयोग दूसरे विषय में भी किया जा रहा है। जिससे इसकी महानता बढ़ती जा रही है आधुनिक हिंदी साहित्य में भी मनोविश्लेषण को आधार मानकर कई उपन्यास एवं कहानियाँ लिखी गई है। अज्ञेय, जैनेंद्र, इलाहाचंद्र एवं देवराज जैसे लेखकों ने इस क्षेत्र में अपना महत्व स्थापित किया। आधुनिक युग जितना संघर्षील एवं कठिन होता जा रहा है। उतनी साहित्य में अभिव्यक्ति गूढ एवं रहस्यमयी होती जा रही है। आज मानव का बाहरी कलेवर जितना सरल एवं सीधा दिखता है उतना ही उसका अन्तर्जगत कठोर, कुंठाग्रस्त और संत्रासों तमाम प्रकार की मनोविकृतियों से जकड़ा रहता है। आज मानव खुलकर नहीं जी का रहा है वह अपने अंदर की बात को बात नहीं पाता है। मनोविश्लेषण के सहारे उसके अंतर मन की बातों को समाज के सामने रख पाते हैं। सही में मनोविश्लेषण मानव मन की एक अनोखी गाती है। आधुनिक समय में फ्रायड, एल्डर, युंग और स्पेंसर जैसे अनेक मनोविश्लेषण वादियो ने मानव मन के संबंध में बड़ा विवेचन किया है। जिनके विवेचन का असर पूरे विश्व के साहित्य में हमें किसी न किसी रूप में दिखाई देता है।

* शोधार्थी, हिंदी विभाग भाषा साहित्य भवन, गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद, गुजरात।
** निर्देशक एवं सहआचार्य, श्रीमती ए.पी. पटेल आर्ट्स एवं स्व.श्री एन.पी. पटेल कॉमर्स कॉलेज, नरोडा, अहमदाबाद, गुजरात।

मनोविश्लेषण का अर्थ है अपने मन को समझने की योग्यता व क्षमता। मनोविश्लेषण फ्रायड द्वारा विकसित कुछ विचारों का समूह है जिसमें कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों ने भी योगदान दिया। मनोविश्लेषण सामान्यतः मानव की मानसिक क्रियाओं एवं व्यवहारों के अध्ययन से संबंधित है। दूधनाथ सिंह ने अपने कथा साहित्य में अहं की भावना का आत्म विश्लेषण करते हुए मनुष्य के अकेलेपन, अजनबी पान, अलगाव को गहराई से उभरा है। लेखक समाज से जुड़ा होता है और उसे पर प्रत्येक सामाजिक परिस्थिति का प्रभाव पड़ता है, उनका लेखन कार्य उससे प्रभावित होता है। उन्होंने वही लिखा जो समाज में देखा व महसूस किया। उन्होंने पारिवारिक विघटन, नारी– मनोविज्ञान, बाल– मनोविज्ञान यौन कुण्ठाएँ आदि जैसे मनोवैज्ञानिक विषयों पर अपनी लेखनी चलाई। इस दृष्टि से उनका कथा साहित्य सामाजिक जीवन से जुड़ा दिखाई देता है। 'नमो अंधकारं' उपन्यास का पात्र सखाराम अपने जीवन से ऊबकर कहता है– " महीनों हो गए। चौखट लाँघने का मन नहीं होता। बच्चे बत्ती जलाते हैं तो मना कर देता हूँ। जैसे भीतर का दिया बुझ गया है। दिन –भर लेटा रहता हूँ। पत्नी बिस्तर पर ही खाना देती है और मेरा मुँह जोहती रहती है। दोस्त–यारों का फोन आता है तो मना कर देता हूँ। बात नहीं करता जोगियों का आता है पत्नी बार–बार फोन उठाते तंग आ गई है।" आधुनिक युग संघर्षमय और जटिल होता जा रहा है, साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति भी गहरी व रहस्यमयी होती जा रही है। यहाँ पर लेखक ने मनुष्य के मन की आंतरिक वेदना को व्यक्त किया है। उनकी कहानियों में पुरुष के अहंकार पर भी प्रहार किया है। ऐसे अहंकारी पुरुष हर देश में नारियों पर अत्याचार करते हैं। 'विजेता' कहानी का शीर्षक हमारे सामने मनुष्य की विजय मुद्रा प्रस्तुत करता है इससे ऐसा लगता है मानव अहंकारी पति की मानसिकता की सर्जरी की गई हो, वह सामने वाली महिला के प्रति अपनी इच्छा के बारे में बात नहीं करता। इसके विरुद्ध वह अपनी ही पहचान का राग अलापता रहता है। कुंठा, हीनता और अंतर्द्वंद्व मनोविश्लेषणात्मक स्वरूप के अंतर्गत आते हैं। स्वतंत्रता के बाद समाज में उपजी कुंठा, हीनता तथा अंतर्द्वंद्व की स्थिति के परिणाम स्वरुप व्यक्ति कुंठित होता चला जाता है।

वह सामाजिक व्यवस्था के प्रति घोर असंतुष्ट होने लगता है। और इस कुंठा ने खतरनाक रूप ले लिया। जब आदमी की मूल भावना खत्म हो जाती है तो व्यवस्था किस तरह क्रूर हो जाती है। इस स्थिति को दूधनाथ सिंह की कहानी 'प्रतिशोध' में दिखाया गया है। नौकरशाही खटमल की तरह लोगों को परेशान कर रही है। व्यवस्था कितनी आतंककारी है। वह लोगों को परेशान कर उसे कायर बना रही है। आज के मनुष्य की बड़ी घोर विडंबना है कि वह अपने जीवन में अकेलेपन को महसूस कर रहा है। उसके भीतर स्वयं को लेकर और अपने परिवेश को लेकर बहुत कुंठित होता है। 'निष्कासन' उपन्यास की लड़की इसी प्रलय का शिकार है– " लड़की को लगा, उसे गश आ रहा है। उसने सर को झटक दिया। उसका बड़े जोरों से मन हुआ कि वह तीर की तरह निकले और हॉस्टल के बाहर सड़क पर भाग जाय और खूब जोर से चीखे– चिल्लाए।"

दूधनाथ सिंह का कथा साहित्य दांपत्य जीवन के अंतर्द्वंद्व का दूसरा रूप पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। उसमें प्रेम के प्रति नया नजरिया विकसित करने की कोशिश की गई है। दांपत्य जीवन के बीच उत्पन्न कड़वाहट की छानबीन उनके कथा साहित्य में उचित ढंग से हुई है। उनकी प्रेम संबंधी कहानियाँ मानवीय संवेदनाओं और मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों को बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से दर्शाती हैं। उनकी कथा साहित्य में कई मनोवैज्ञानिक मोड नजर आते हैं। प्रत्येक मोड पर संवेदना प्रबल हो जाती है। उनकी कहानियाँ मानवीय संबंधों की जटिलताओं, तनावों एवं विफल दांपत्य जीवन को बड़ी–बारीकी से सामने लाती हैं। ये कहानियाँ मध्यवर्गीय परिवार के बीच जीवन की विसंगति को सामने लाती हैं। उन्होंने अपने कथा साहित्य में समाज में हो रहे विघटन को स्थान दिया है।

यह समाज का कटु चेहरा है, लेकिन साहित्य में समय के साथ ही सच को स्वीकार किया है। समय के साथ ही हमारे जीवन से मूल्य और मान्यताएँ पतन के कगार पर पहुँच चुके हैं। 'सपाट चेहरे वाला आदमी' में जीवन की कृत्रिमता, सामाजिक अमानवीयता, भावहीनता, अकेलापन और अवसाद की अभिव्यक्ति हुई है। कथा साहित्य में अस्तित्वबोध को महान अभिव्यक्ति मिली है। उनके पात्र वर्तमान की आधुनिकतावादी आपाधापी में कहीं

खोते चले जाते हैं, और अपने अस्तित्व के प्रति विशेष सतर्क रहते हैं। परिवेश की बदलती प्रवृत्तियों से न केवल समाज और उसकी परिस्थितियों में परिवर्तन आया बल्कि वैयक्तिक स्तर पर भी पर्याप्त प्रभाव पड़ा व्यक्ति अपने होने को प्रमाणित करने की तड़प के साथ ही व्यवस्था के प्रति मोहभंग महसूस करता है। आजकल युवाओं में यो बेकार और मनमानिक को देखने को मिल रही है सह –शिक्षा अश्लील फिल्में देखने और अनैतिक साहित्य पढ़ने के बढ़ते चलन के करण युवा पीढ़ी यौन संबंधों को लेकर पारंपरिक मान्यताओं को खारिज कर रही है।

निष्कर्ष

मनोविश्लेषणात्मक विचारधाराओं के प्रभाव से मानव के द्वारा अनुभव किये जाने वाले व्यर्थताबोध से जुड़े हुए अनेक भावों का प्रकाशन दूधनाथ सिंह के कथा साहित्य में होता रहा है। उनका साहित्य प्रगतिशील दृ ष्टिकोण की दम भरता नजर आता है। उन्होंने अहं की भावना तथा आत्म विश्लेषण को व्यक्त करते हुए मनुष्य के अकेलेपन को अत्यंत सूक्ष्मता से रेखांकित किया है। उनकी कहानियों में ऐसा लगता है कि आज का आदमी ऊपर से भले ही सरल और सहज दिखाई देता है, लेकिन भीतर से वह उतना ही जटिल और कुंठा, संत्रास और मानसिक विकारों से घिरा हुआ है। उन्होंने मनोविश्लेषणात्मक अंतर्द्वंद्व के अंतर्गत प्रेम एवं दांपत्य जीवन के चित्रण में अपूर्व सफलता पाई है। उनकी स्वयं की लेखकीय ऊर्जा और साहस के साथ ही कल्पना शीलता ही है कि वह अपने विषय को पूरी गंभीरता और जिम्मेदारी के साथ न्याय प्रदान करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Hindwi https://www.hindwi.org>propile
2. दूधनाथ सिंह (नमो अंधकारं) राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ –115
3. दूधनाथ सिंह (निष्कासन) राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ–44
4. दूधनाथ सिंह, सपाट चेहरे वाला आदमी, साहित्य भंडार इलाहाबाद पृष्ठ –147
5. दूधनाथ सिंह (सुशान्त) लोक भारती प्रकाशन (इलाहाबाद) 1991 पृ– 110
6. दूधनाथ सिंह (सपाट चेहरे वाला आदमी) साहित्य भंडार (इलाहाबाद) 2015) पृ– 90
7. यादव प्रशांत कुमार, दूधनाथ सिंह के कथा साहित्य में मध्यवर्ग, उत्कर्ष पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स कानपुर पृष्ठ–175–176

❖◆❖